International Journal of Applied Research 2015; 1(12): 552-554

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(12): 552-554
www.allresearchjournal.com
Received: 26-09-2015
Accepted: 29-10-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र

आदिकालीन हिन्दी साहित्य–एक मूल्यांकन

डॉ. शिवदत्त शर्मा

हिन्दी साहित्य के इतिहास में आदिकाल सर्वाधिक विवादित काल रहा है। नामकरण के विषय में तो आज भी इतिहासकारों में नाना मतभेद हैं। कालक्रम में सबसे पहले जार्ज ग्रियर्सन ने इस काल को चारण काल का नाम दिया। उसके बाद मिश्रबन्धुओं ने इसे रासो काल कहा । इस युग की अधिकांश रचनाएं चारणों एवं भाटों द्वारा रचित हैं अतः इसी दृष्टि से उपरोक्त दोनों नाम आदि काल के लिए प्रयुक्त किए गए।यह सत्य है कि ग्रियसन ने काव्य रचयिता कवियों को ध्यान में रख कर नाम करण किया गया जबकि मिश्र बन्धुओं ने काव्य रचनाओं अथवा कृतियों को ध्यान में रख कर नामकरण किया। सम्भवतः इस काल का समस्त साहित्य उद्घाटित न होने के कारण केवल एक ही प्रवृत्ति या विशेषता को आधार बना कर नामकरण किया गया है क्योंकि अद्यतन शोधों से अन्य पक्षों और प्रवृत्तियों का भी उद्घाटन हुआ है उन्हें भी ध्यान में रख कर नामकरण होना चाहिए।1

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा रचित हिन्दी साहित्य के इतिहास में उन्होंने सर्वप्रथम सर्वाधिक सशक्त आधार पर आदिकाल का एक सर्वथा नया नाम वीरगाथा काल सुझाया है जिसकी कालावधि सम्वत् 1050 से 1375 तक मानी है।इस काल के अन्तर्गत

दो प्रकार की रचनाएं मिलतीं हैं अपभ्रंश और लोकभाषा की। अपभ्रंश की रचनाओं में कई रचनाएं जैनों के धर्मतत्व निरूपण सम्बन्धी हैं जो साहित्य की कोटि में नहीं आतीं । जिन्हें साहित्यिक कोटि में रखा जा सकता है उनमें कुछ तो भिन्नभिन्न विषयों पर फुटकर दोहे हैं,जो इस काल की विशेष प्रवृत्ति नहीं कही जा सकता है। उपलब्ध बारह रचनाओ में छः रासो ग्रंथ तथा तीन विद्यापति की रचनाएं ,खुसरो की पहेलियां और दो अन्य रचनाएं हैं। इनके आधार पर आदि काल का लक्षण निरू:पण हो सकता है।इनमे से अंतिम दो तथा बीसलदेव रासो को छोड कर शेष सब ग्रंथ वीरगाथात्मक ही है। अतः आदिकाल का नाम वीरगाथा काल ही रखा जा सकता है। शुक्ल द्वारा घोषित इस नामकरण के दो मूल कारण हैं।एक रचनास्वरूप तथा ग्रंथों की प्रसिद्धि। नामकरण के शीघ्र बाद शुक्ल जी के इस मत का विरोध भी होने लगा। इसका कारण

अपभ्रंश साहित्य को साहित्य के अन्तर्गत माना जाना तथा अनेक नए महत्व पूर्ण अपभ्रंश–ग्रंथों की उपलब्धि और शुक्ल जी के द्वारा मान्य बारह ग्रंथों की संदिग्धता। 2 फलतः यहीं से आदिकाल का नामकरण पुनर्मूल्यांकन की मांग करने लगा और जल्दी ही एक समस्या का रूप धारण कर गया।

अपभ्रंश साहित्य का समावेश कर लेने पर आदि काल की सीमावधि लगभग 700 वर्ष सातवीं से चौदहवीं तक हो जाती है। शुक्ल जी ने जिन एक दर्जन उपलब्ध ग्रंथों पर आधारित उस समय इस काल का नामकरण वीरगाथा काल और प्रधान–काव्य प्रवृत्ति वीरगाथात्मक का निर्धरण किया था,आगे चलकर अन्य इतिहासकारों ने उन शुक्ल जी के स्वीकृत ग्रंथों को अप्रमाणिक सिद्ध कर दिया इतना ही नहीं स्वयं शुक्ल जी ने ही अपभ्रंश में रची सिद्ध नाथादि की काव्य रचनाओं को शुद्ध साहित्य में न मान कर आदिकाल के पहले साढे तीन सौ वर्षों और उसके साहित्य को छोडकर कहा कि आदि काल की इस दीर्घ परम्परा के बीच प्रथम डेढ सौ वर्ष के भीतर तो रचना की किसी विशेष प्रवृत्ति का निश्चय नहीं होता है–धर्म ,नीति,श्रृंगार, वीर सब प्रकार की रचनाएं दोहों में मिलतीं हैं। इस अनिर्दिष्ट लोक–प्रवृत्ति के उपरानत जब से मुसलमानों के आक्रमणों का आरम्भ होता है तब से हम हिन्दी साहित्य की प्रवृत्ति एक विशेष रूप में बंधती हुई पाते हैं। 3

वर्तमान में अधिकांश विद्वान एक ओर जहां इस युग के साहित्य को महत्वपूर्ण समझते हैं,वहीं इस साहित्य को प्रामाणिकता की कसौटी पर भी कस चुके हैं। यह भी सत्य है कि नाना प्रकार की काव्य प्रवुत्तियों का मूल उत्स भी वास्तव में आदिकालीन साहित्य ही है। तटस्थ दृष्टि से देखें तो ष्ह सत्य भी है जिसका सबसे बडा प्रमाण यह है कि इस युग में रचित विपुल साहित्य और उसमें उपलब्ध भिन्न–भिन्न काव्य प्रवृत्तियां आज एकदम हमारे समक्ष हैं।

आदिकालीन साहित्य का परिचय

हिन्दी साहित्य का आदि काल विवादग्रस्त होने पर भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है।आचार्य द्विवेदी ने इसे विरोधों एवं व्याघ्रातों का युग कहा है। किसी भी साहित्य की प्रारम्भिक अवस्था के लिए ऐसा होना स्वाभाविक भी है। भाषा विज्ञान तथा साहित्य की दृष्टि से एवं भाषा की दृष्टि से यह संक्रमण काल कहा जाता है।इस युग में भाषा में निरन्तर परिवर्तन हो रहा था तथा आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएं जन्म ले रहीं थीं। साहित्यिक अपभ्रंश तथा जनभाषा में अन्तर स्पष्ट लक्षित होने लगा था। देशी भाषाएं भी विद्वानों द्वारा सम्मानित होने लगीं थीं। साहित्यिक दृष्टि से यह युग पर्याप्त विविधता लिए हुए है। इस युग की कृतियों में किसी एक विशेष प्रवृत्ति का प्राधान्य न होकर धर्म,नीति, रृंगार ,वीरता ,आदि विविध प्रवृत्तियों का सम्मिश्रण सा दिखाई पडता है। । इस काल में अपभ्रंश, अवहट्ठ,डिंगल,पिंगल,खडी बोली तथा मैथिली के साथ साथ संस्कृत भाषा का अलंकरण–प्रधान साहित्य भी प्रचुर मात्रा में मिलता है। महाकाव्य,खण्डकाव्य तथा मुक्तक सभी रूपों में धार्मिक एवं लौकिक दोनों काव्य परम्पराएं विकसित हुईं। 4 काव्य प्रवृत्ति के आधार पर आदिकालीन साहित्य का विभाजन निम्न लिखित वर्गों में किया जा सकता है।

1 धार्मिक एवं साम्प्रदायिक साहित्य

इस वर्ग में अपभ्रंश में रचित जैन कवियों सिद्धों और नाथों की रचनाएं आतीं हैं।इनमें भी गुण और मात्रा की दृष्टि से जैन रचनाएं विशेष महत्वपूर्ण हैं।इस वर्ग की प्रंमुख रचनाएं है – स्वयम्भू का पउमचरिउ पुष्पदन्त का पउमचरिय धनपाल धक्कड का भविष्यतकहा धवल का हरिवंशपुराण रइधूका पद्म पुराण, यशकीर्ति का पाण्डव पुराण तथा श्रुत कीर्ति का हरिवंश पुराण आदि।ये सभी रचनाएं ऐतिहासिक–धार्मिक महापुरुषों के जीवनचरित्र से संबन्धित हैं और काव्यरूप की दृष्टि से महाकाव्य अपभ्रंश में ही रचे गए प्रमुख धार्मिक खण्डकाव्य है। इसके अतिरिक्त भी अनेक रचनाएं धार्मिक साहित्य में प्राप्त होतीं हैं। 5

बौद्ध धर्म के विकृत रूप वज्रयान और उसकी तांत्रिक प्रधानता से एक नया सम्प्रदाय प्रकाश में आयां मंत्रों द्वारा सिद्धि प्राप्त कर लेने पर जोर देने वाले ये साधक सिद्ध कहलाए। सिद्धों ने दलित एवं शोषित वर्ग को वाणी दी तथा शोषक वर्ग का डट कर विरोध किया।नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक गुरु गोरख नाथ को स्वीकार किया जाता है। उनकी 40 कृतियां उपलब्ध हो चुकीं हैं। डॉ बडथ्वाल ने इनका संग्रह गोरखवानी में किया है।इनका प्रमुख विषय व्रह्मचर्य,संयम,पवित्रता,ज्ञान, निष्ठा एवं बाह्याचरण के प्रति अनादर व्यक्त करना है।। नाथ कवि नीतिकाव्य के अधिक निकट थे।

2 वीरतामूलक साहित्य

इस वर्ग में वे रचनाएं आतीं हैं जिनमें ऐंतिहासिक घटनाओं और नायकों,आश्रयदाताओ की युद्धादि विषयक कीर्तिकलापों का अंकन किया गया है।अन्य रचनाओं के अतिरिक्तं मुख्य रूप से इस वर्ग में रासोकाव्य,या चारणकाव्य आते हैं। डिंगल– पिंगल में रचे गए रासो काव्य इसकी प्रमुख रचनाएं हैं।दलपति विजय का खुमान रासो , नरपति नाल्ह का बीसल देवरासो तथा चन्दवरदाई का पृथ्वी राज रासो प्रमुख रचनाएं हैं। इनमें से कुछ पूर्णतया अप्रमाणिक कुछ अर्द्धप्रमाणिक तथा कुछ प्रामाणिक रचनाएं हैं। इनमें युद्धादि का सजीव चित्रण,आश्रयदाताओं की अतिशयोक्ति परक प्रशंसा,कल्पना प्राचुर्य ,छन्द वैविध्य, तथा महाकाव्य और मुक्तक दोनों ही प्रकार के काव्य रूपों का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त अन्य रचनाएं जयमयंकजसचन्द्रिका आदि भी महत्व पूर्ण हैं।

3 लोकपरम्परामूलक साहित्य

इस वर्ग में जगनिक का आल्ह तथा अमीरखुसरो की कुछ रचना प्रहेलिका,मुकरियां आदि आता है।इस वर्ग की रचना आल्हा सर्वाधिक लोकप्रिय रचना हे। अभी तक इसका पूर्ण प्रामाणिक रूप प्राप्त नही हो पाया है। कुछ इतिहासकार इसको पृथ्वीराज रासो का एक भाग भी मानते हैं। अमीर खुसरो इस युग के अद्भुत कवि हैं। चारण कालीन रक्तरंजित इतिहास में जब पश्चिम के चारणों की डिंगल कविता उद्धत स्वरों में गूंज रही थी,तथा पूर्व में गोरखनाथ की गम्भीर धार्मिक प्रवृत्ति दे रही आत्मानुशासन की शिक्षा दे रही थी,उस काल में अमीर खुसरो की विनोदपूर्णकविता हिन्दी साहित्य के इतिहास की एक महान निधि है। कवि खुसरो ने कई भाषाओं मे रचना की जिनमें सर्वाधिक जिस भाषा का प्रयोग किया गया वह दिल्ली और आसपास में बोली जाने वाली भाषा थी जिससे कालान्तर मे खडी बोली का विकास हुआ। जनसाधारण की इस भाषा में से जनसाधारण की कविता करना खुसरो का सर्वाधिक विशिष्ट कार्य थां ।पहेलियां,मुकरियां,दोसखुन,गीत,दोहे तथा ढकोसले आदि मुक्तक काव्य ही खुसरो को अधिक प्रिय था।6

4 प्रेम तथा श्रृंगारिक साहित्य

इस युग में भी प्रेम तथा श्रृंगार रस से ओतप्रोत रचनाएं भी कम नहीं रची गईं।वीरगाथात्मक काव्य रचनाओं में तो प्रेम या श्रृंगार वीर का सहयोगी बना ही है।स्वतंत्र और लोक प्रिय रचनाओं मे करूण रस से ओतप्रोत रचनाएं भी प्राप्त होतीं हैं। अपभ्रंश में लिखित सिद्धसेन की बिलासबई कहा तथा औदीच्य व्राह्मण की हंसावली अब्दुलरहमान की रचना संदेशरासक ,दाउद का चंदायन कुशल नाभ का ढोलामारु रा दोहा विद्यापति की पदावली आदि प्रसिद्ध रचनाएं हैं।हंसावली श्रृंगाररसप्रधान छोटी सी रचना है। संदेशरासक प्रेमश्रृंगार की सुन्दर रचना है। विद्यापतिकी पदावली में यद्यपि भक्ति,श्रृंगार,और अन्य विविध प्रकार के पद हैं,किन्तु प्रधानता निस्संदेह श्रृंगारिक पदो की ही है।

5 आदिकाल का गद्य साहित्य

इस काल में जहां अभूतपूर्व काव्य की रचना हुई वहीं कुछ गद्य साहित्य का मूल भी इस युग में दिखाई देता है। 13 वीं चौदहवीं शताब्दी में मुस्लिमों ने हिन्दुओं द्वारा बोली जाने वाली लोकभाषा जिसे वे हिन्दवी,हिन्दुई और हिन्दी कहते थे, अपनी फारसी के साथ मिला कर बोलने और लिखने का प्रयास किया और खडी बोली में पहेलियां मुकरियां ,लिखीं। खालिक बारी नाम्क फारसी–हिन्दी शब्दकोष भी लिखा। इसतरह फारसी हिन्दी मिश्रित बोली अथवा भाषा हमारे समक्ष उपस्थित होती है। यही फारसी हिन्दी मिश्रित भाषा जिसे दक्षिण में देहलवी, मुसलमानी शुमाली आदि विभिन्न नामों के साथ दक्खिनी हिन्दी कहा गया। इस भाषा में अनेक कवि होने क साथसाथ गद्य लेखक भी हुए। ख्वाजाबंदानवाज कवि और गद्य लेखक दोनों थे। इस प्रकार के प्रसिद्ध साहित्यकार दक्खिनी हिन्दी की उपज हैं। उत्तरी भारत में भी ऐंसी मिली जुली हिन्दी फारसी गुजराती,मराठी,से युक्तभाषा को रेखता कहा गया। फारसी में रेखता का अर्थ मिश्रित या मिलाजुला या टेढा है।7

उर्दु शब्द तुर्की भाषा का है,जिसका अर्थ बाजार या छाबनी अथवा सैनिक पडाव है ।मुगलों के दरबार में उस भाषा को जुबाने उर्दु कहते हैं।

आदि कालीन रचित साहित्य न केवल विपुल है अपितु विविध भी है। उसमें पाई जाने वाली साहित्य की विविध प्रवृत्तियां इसी सत्य की सूचक हैं। शुक्ल जी ने यद्यपि अधिकांश साहित्य को शुद्ध साहित्यिक कोटि का नहीं माना हो अथवा प्रामाणिकता–अप्रामाणिकता एवं अपभ्रंश–पुरानी हिन्दी के चक्कर में कुछ विद्वान इसे अन्धकार युग की संज्ञा देते हों किन्तु सत्य यह है कि इस युग का साहित्य किसी भी तरह से न्यून नहीं है। भाषा की दृष्टि से यह युग वैविध्यपूर्ण है। अपभ्रंश, डिंगल ,पिंगल लोकभाषा आदि नाना भाषाओं का प्रयोग इस काल की विशेषता है।

नाना प्रकार की काव्य रुढियां दोहा–चौपाई छन्द आदि अपभ्रंश की ही देन हैं। इसी तरह वीरकाव्यपरक रासो ग्रंथ,खुसरो के मुक्तक,तथा विद्यापति की पदावली इसी युग की देन है। यदि सही कहा जाए तो इस में अतिशयोक्ति नहीं है कि हिन्दी साहित्य का विपुल साहित्य आज जो हमें दिखाई देता है उस का मूल यही आदि कालीन साहित्य है।

सन्दर्भ – सूचि

1. डॉ नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ 112
2. डॉ राम खिलावन पाण्डे हिन्दी साहित्य का नया इतिहास पृ 67
3. आचार्य चतुर सेन शास्त्री इतिहास ग्रन्थ पृ 34
4. डॉ हरीशचन्द्र वर्मा हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ 78
5. डॉ हरीश चन्द्र वर्मा हिन्दी साहित्य का आदि काल पृ 48
6. डॉ भोला नाथ तिवारी हिन्दी साहित्य पृ 54
7. डॉ गणपति चन्द्र गुप्त हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास पृ 39